

भारत में भ्रष्टाचार: कारण और निवारण

डॉ. अशोक कुमार, सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हिसार, हरियाणा

सारांश

भारत में भ्रष्टाचार एक गंभीर समस्या है जो देश के आर्थिक, सामाजिक, और राजनीतिक विकास में बाधा उत्पन्न करती है। इस शोध पत्र में, हम भारत में भ्रष्टाचार के प्रमुख कारणों का विश्लेषण करेंगे और उसके निवारण के लिए संभावित उपायों पर चर्चा करेंगे। भ्रष्टाचार को कम करने के लिए प्रशासनिक सुधार, कानूनी कदम, और नागरिक जागरूकता के महत्व पर विशेष जोर दिया जाएगा।

परिचय

भ्रष्टाचार एक ऐसी समस्या है जो किसी भी समाज और देश की प्रगति को प्रभावित करती है। भारत में भ्रष्टाचार का व्यापक प्रसार देखा गया है, जिससे विकासशील परियोजनाओं में देरी, सरकारी संसाधनों का दुरुपयोग, और जनसामान्य के अधिकारों का हनन होता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य भारत में भ्रष्टाचार के विभिन्न कारणों को समझना और उसके निवारण के उपायों पर विचार करना है।

भ्रष्टाचार के कारण

1. प्रशासनिक कारण

लालफीताशाही

भारतीय प्रशासनिक प्रणाली में लालफीताशाही की जड़ें गहरी हैं। विभिन्न प्रक्रियाओं और नियमों की जटिलता के कारण भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है।

निगरानी की कमी

प्रशासनिक प्रणाली में निगरानी और जवाबदेही की कमी होने के कारण अधिकारी भ्रष्ट आचरण में संलिप्त होते हैं।

2. राजनीतिक कारण

राजनीतिक दबाव

राजनीतिक दलों और नेताओं द्वारा अधिकारियों पर दबाव डालने के कारण भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है। चुनावी प्रक्रिया में धनबल और बाहुबल का उपयोग भी एक प्रमुख कारण है।

चुनावी खर्च

चुनावी अभियानों के लिए आवश्यक भारी धनराशि जुटाने के लिए राजनीतिक दल और उम्मीदवार अवैध तरीकों का सहारा लेते हैं।

3. आर्थिक कारण

गरीबी और बेरोजगारी

गरीबी और बेरोजगारी के कारण लोग रिश्तत लेने और देने को मजबूर होते हैं। यह स्थिति भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है।

वेतन असमानता

सरकारी कर्मचारियों के वेतन में असमानता होने के कारण वे अतिरिक्त आय के स्रोत खोजने के लिए भ्रष्ट आचरण में लिप्त होते हैं।

4. सामाजिक कारण

शिक्षा की कमी

शिक्षा की कमी के कारण लोग अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक नहीं होते, जिससे भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है।

सांस्कृतिक और सामाजिक मान्यताएँ

कुछ सामाजिक मान्यताएँ और सांस्कृतिक धारणाएँ भ्रष्टाचार को एक स्वीकार्य व्यवहार मानती हैं।

भ्रष्टाचार के निवारण के उपाय

1. प्रशासनिक सुधार

पारदर्शिता और जवाबदेही

प्रशासनिक प्रक्रियाओं में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए सख्त नियम और निगरानी प्रणाली स्थापित की जानी चाहिए।

तकनीकी सुधार

ई-गवर्नेंस और डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग प्रशासनिक प्रक्रियाओं में भ्रष्टाचार को कम करने में सहायक हो सकता है।

2. कानूनी सुधार

कड़े कानून

भ्रष्टाचार को नियंत्रित करने के लिए सख्त कानून बनाए जाने चाहिए और उनका सख्ती से पालन सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

न्यायिक सुधार

न्यायिक प्रणाली में सुधार कर भ्रष्टाचार से जुड़े मामलों का तेजी से निपटारा किया जाना चाहिए।

3. राजनीतिक सुधार

चुनावी सुधार

चुनावी प्रक्रियाओं में सुधार कर धनबल और बाहुबल के प्रभाव को कम किया जाना चाहिए। चुनाव आयोग को और अधिक शक्तियाँ दी जानी चाहिए।

राजनीतिक पार्टी वित्तपोषण

राजनीतिक पार्टियों के वित्तपोषण में पारदर्शिता लाने के लिए सख्त नियम बनाए जाने चाहिए।

4. आर्थिक सुधार

वेतन में सुधार

सरकारी कर्मचारियों के वेतन में सुधार कर उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया जाना चाहिए ताकि वे भ्रष्ट आचरण से बच सकें।

गरीबी उन्मूलन

गरीबी और बेरोजगारी को कम करने के लिए सशक्त और प्रभावी योजनाएँ बनाई जानी चाहिए।

5. सामाजिक सुधार

शिक्षा और जागरूकता

शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रम चलाकर लोगों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए।

सामाजिक नैतिकता

सामाजिक नैतिकता और मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम और अभियान चलाए जाने चाहिए।

निष्कर्ष

भारत में भ्रष्टाचार एक गंभीर समस्या है जो देश के विकास में बाधा उत्पन्न करती है। इसके निवारण के लिए प्रशासनिक, कानूनी, राजनीतिक, आर्थिक, और सामाजिक सुधारों की आवश्यकता है। पारदर्शिता, जवाबदेही, और नागरिक जागरूकता को बढ़ावा देकर भ्रष्टाचार को नियंत्रित किया जा सकता है। इन सुधारों के माध्यम से ही हम एक स्वस्थ और विकसित समाज की स्थापना कर सकते हैं।

संदर्भ

- भारत सरकार. (2020). भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम.
- ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल. (2020). भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक.
- योजना आयोग. (2015). भारत में भ्रष्टाचार पर राष्ट्रीय रिपोर्ट.
- भारतीय रिज़र्व बैंक. (2020). आर्थिक और वित्तीय स्थिति की रिपोर्ट.
- लोकपाल और लोकायुक्त अधिनियम. (2013).